॥ अर्हम् ॥

## सन्मार्ग प्रचार समिति, केकड़ी के

## प्रकाशन :

| नं. | ग्रंथ का नाम | पृष्ठ | मूल्य | प्रकाशन काल |
|---|---|---|---|---|
| ✕ १. | पद्मावती पूजा मिथ्यात्व है | ३० | १) | १९७२ |
| २. | शासनदेव पूजा रहस्य (विद्वद् परिषद् द्वारा १००१)रु. से पुरस्कृत) | ५० | २) | १९७५ |
| ३. | जैनधर्म में रात्रि पूजा का निषेध | २४ | १) | १९७६ |
| ✕ ४. | सम्यक् पूजा विधि | २० | १) | १९८० |
| ५. | स्त्री प्रक्षाल निषेध | ६० | २) | १९८४ |
| ६. | केशर पुष्प विधान | ३२ | १) | जन. १९८७ |
| ७. | अष्ट द्रव्य पूजा रहस्य | ४० | १)५० | फर. १९८७ |
| ८. | अष्ट द्रव्य पूजा रहस्य | ४२ | २) | मार्च १९८७ |
| ९. | एक दिन की प्राचीन प्रतिष्ठा विधि | १२ | १) | मई १९८७ |

*

## निम्नांकित प्रकाशन भी उपलब्ध हैं :

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १. | जैन निबंध रत्नावली (सजिल्द) | ५०० | २५) | १९६६ |
| २. | सामायिक पाठादि संग्रह | १२५ | १)५० | १९५४ |
| ३. | चूनड़ीं (ज्ञान कुंजी) | ४० | १) | १९६० |
| ४. | जैन निबंधरत्नावली भाग २** | ८०० | ३०) | १९८८ |

प्राप्तिस्थान :
**मिलापचन्द्र रतनलाल कटारिया**
केकड़ी (अजमेर-राज०)–३०५४०४
**KEKRI** (Ajmer)

**श्री मिलापचन्द्र कटारिया जैन ग्रंथमाला**
**पुष्प नं. ८**

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

# एक दिन की प्राचीन प्रतिष्ठा विधि

*

लेखक :–
**रतनलाल कटारिया, केकड़ी (अजमेर)**

प्रकाशक :–
**श्री. क्रान्ति चन्द्र जी महेन्द्र कुमार जी कटारिया**
**कटारिया केरियर्स, ट्रान्सपोर्टनगर, कानपुर २३**
( सन्मार्ग प्रचार समिति, केकड़ी के सौजन्य से )

प्रथम संस्करण
मई १९८७

मूल्य : १) रु.

# आमुख

प्रतिमा अरिहंत तीर्थंकर की होती है। वसुनंदिश्रावकचारादि में—मणि, रत्न, सुवर्ण, रजत, पीतल, मोती, पाषाण, चित्र, लेप तथा मिट्टी काष्ठ आदि में प्रतिमा बनाना लिखा है।

वृद्धत्व बाल्यरहितांगमुपेत शांतिं, श्री वृक्ष भूषिहृदयं नखकेश हीनं।
सद्धातु चित्र दृषदं समसूत्र भागं, वैराग्य भूषित गुणं तपसि प्रशक्तं ॥१५२॥

(उत्तम-धातु पत्थर की मूर्ति, सम्यक् बराबर नापकी, वृद्ध और बाल्य अवस्था से रहित-युवारूप, प्रशांत, श्री बत्स चिन्ह से सुशोभित, जिसके नख-केश बढ़े हुए न हों, दिगंबर ध्यानस्थ योगीरूप होती है।)

आशाधर प्रतिष्ठापाठ (अ. १ श्लोक ८३) में लिखा है :-'फिर से घड़ी हुई, संदिग्ध, जर्जरित, अंगहीन, अनिष्टरूप, प्राक्प्रतिष्ठित मूर्ति की प्रतिष्ठा न करें'।

अतीताब्द शतामूर्ति, या पूज्या स्यान्महत्तमैः।
खण्डिता स्फुटिताप्यर्च्या, अन्यथा दुख दायिनी ॥ १-११ ॥

(सौ वर्ष से ज्यादा पुरानी, बड़े लोगों द्वारा पूज्य ऐसी मूर्ति खंडित-टूट फूट जाये तो भी वह पूज्य होती है। अगर उसे न पूजे तो वह अनिष्ट कारक होती है।) करीब १५वीं शती में वर्धमान भट्टारक ने भी संस्कृत में "वरांग चरित" बनाया है जो छप चुका है उसके सर्ग १२ पृष्ठ २२६ में लिखा है:—

'राजा वरांग ने प्रतिमा के टंक दोषों के शुद्धयर्थ जल से प्रक्षालन किया फिर आकरशुद्धि (वेदी-शुद्धी) की, शुभलग्न में प्रतिष्ठा चार्य ने प्रतिमा के तिलक किया, फिर नयनोन्मीलन, सहस्त्र कलशाभिषेक कर प्रतिमा को विराजमान किया'।

यहाँ सूरिमंत्र का कोई उल्लेख नहीं है, तिलकदान और अभिषेक से ही प्रतिष्ठा पूर्ण की है। सावयधम्म दोहा में भी—तिल्लइ दिण्णइ जिणवरहं (नं. १९७) द्वारा तिलकदान ही व्यक्त किया है। नेमिचन्द्र ने जो अपने प्रतिष्ठा ग्रंथ का "प्रतिष्ठा-तिलक" नाम रखा है उससे भी यही ध्वनित किया है कि-प्रतिष्ठा में तिलकदान विधि मुख्य है। प्राचीन समय में तो केवल अभिषेक से ही एक दिन में प्रतिष्ठा हो जाती थी जैसा कि-जटासिंह नंदि के वरांग चरित में बताया है।

उत्तर पुराण पर्व ५४ में लिखा है :—

**प्रतिष्ठा कल्प संप्रोक्तैः प्रतिष्ठाप्य क्रिया क्रमैः।**
**कृत्वा महाभिषेकं च, जिन संगम मंगलैः॥ ४९ ॥**

(प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त क्रियाओं के साथ महाभिषेक से प्रतिष्ठा पूर्ण की।)

यही सब इस पुस्तक में विशदता से बताया है। यह विस्तृत निबंध—'एक दिन की प्राचीन प्रतिष्ठा विधि' सर्व प्रथम 'जैन संदेश' २२ जनवरी ८७ में छपा है।

केकड़ी (अजमेर)
दिनांक : २३-४-८७

**विनीत : रतनलाल कटारिया**

# एक दिन की प्राचीन प्रतिष्ठा--विधि

*

काल चक्र के प्रभाव से, परिस्थितियों की जटिलता से, राजनैतिक सामाजिक विषमताओं से, रुचि भिन्नताओं से, बहुसंख्यक पड़ौसी धर्मों के अनुकरण से, ज्ञानादि के क्षयोपशम की तरतमता से जिनेन्द्र-वीतराग की पूजा विधि में अनेक ह्रास-विकास संक्षेप-विस्तार, परिवर्तन, विविधतायें, विभिन्नतायें, नाना प्रणालियाँ, विधायें प्रस्फुटित हुई हैं उसी प्रकार प्रतिष्ठा विधि में भी ये सब बातें हुई हैं। शास्त्राभ्यासियों से बहु श्रुतज्ञों से अध्ययन-शीलों से यह सब विशेष छिपा हुआ नहीं है। एकरूपता कभी संभव नहीं, युगानुरूप परिवर्त्तन अवश्यंभावी है। एकरूपता का आग्रह नासमझी है। पूजा भक्ति उपासना क्रियाकांडादिका भी क्रमिक इतिहास है।

आज विद्वान् और जनसाधारण प्राचीन प्रतिष्ठा विधि की खोज में जानकारी में संलग्न हैं। नीचे इसके लिये कुछ प्रयत्न प्रस्तुत हैं :—

जटासिंह नन्दिकृत वरांग चरित (७ वीं शताब्दी का) एक अत्यन्त प्राचीन अनुत्तर (लाजवाब) जैन संस्कृत-काव्य है। उसके सर्ग २३ में एतद् विषयक महत्वपूर्ण वर्णन है। उसमें बताया है कि—रानी अनुपमा की इच्छानुसार राजा वरांग ने नगर के मध्य एक अनुपम जिनालय बनवाया मूर्ति तैयार करवाई उसकी प्रतिष्ठा के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाया। मुहूर्त के पूर्व दिन राजा ने नागरिकों को किमिच्छिक दान दिया फिर नगर में जिन-महोत्सव की घोषणा कराई (नांदी विधान)। शाम को सपरिवार राजा जिनालय गया, रात्रि में सब ने वहाँ भजन कीर्तन संगीत स्वाध्याय धर्म चर्चा जप ध्यानादि पूर्वक जागरण किया।

प्रातःकाल सब अभिषेक-शाला में पहुंचे वहाँ स्नापकाचार्य ने मूर्ति को सिंहासन पर विराजमान किया और प्रणाम कर वस्त्र से धूलि आदि को हटाया (प्रोक्षण विधि) फिर दोनों हाथों में जल की झारी उठाकर उससे मूर्ति के चरणों का अभिषेक किया। "जिनादिभ्यः स्वाहा" मंत्र पूर्वक अंगुष्ठ से जलधारा डालकर मूर्ति के मस्तक पर अर्घ्य चढ़ाया फिर स्तोत्रपाठ करते हुए १००८ जलघटों से खूब अभिषेक किया फिर जिन-चरणों पर

कुसुमाक्षत क्षेपण किये तदनन्तर मूर्ति पर गंधलेपन किया उसे माला पहिनाई, रत्नाभूषणों से अलंकृत किया, नैवेद्य समर्पित किया, दीपक जलाये, दर्पण दिखाया, पश्चात् मंगलगान पूर्वक गाजे बाजे से अन्तिम अभिषेक (अवभृथ स्नान) किया, फिर तीन बार स्वस्ति-वाचन किया। हाथ जोड़े खड़े सारे दर्शकों ने मूर्ति का वंदन अभिनन्दन किया, फिर जयघोष के साथ मूर्ति को लेजाकर जिन मन्दिर में स्थापित किया।

एक ही दिन में सारा कार्यक्रम (विधि विधान) समाप्त (सम्पन्न) हो गया न इन्द्र-प्रतिष्ठा, न अंकुरा रोपण, न सकली करण, न अंगन्यास, न शासन देव पूजा, न पंचामृताभिषेक, न तिलकदान, न सूरिमंत्र, न अलग मंडप बाँधना, न बोलियां बोलना, न भोजन नल बिजली का सरंजाम, न ५ दिन तक अलग अलग पंचकल्याणक विधान समारोह। और भी अनेक प्रकार के क्रियाकाण्डों व्यवस्थाओं से निवृत्ति !

जिस प्रकार राज्याभिषेक

राज्याभिषेके मदविह्वलायाः,
हस्ताच्च्युतो हेमघटो युवत्याः।
सोपान मार्गेण करोति शब्द,
"टटं टटं टन् टटटं टटन् टः ॥

(राज्याभिषेक के अवसर पर हर्ष से विह्वल युवती के हाथ से छूटा हुआ सुवर्ण घट टन् टन् करता हुआ सीढ़ियों से नीचे आ गिरा।—समस्या पूर्ति-श्लोक) में युवराज का अभिषेक स्नान-होने से वह राजा हो जाता है। गुरुकुल में विद्यापूर्ण होने पर विद्यार्थी का स्नान-समारोह कर उसे स्नातक पद दिया जाता है यह प्राचीन विधि रही है। उसी तरह १००८ या १०८ कलशों से स्नान कराकर प्रतिमा को वेदी पर स्थापित करना ही वरांगचरित कार ने बिम्ब प्रतिष्ठा बताई है। यह एक दिवसीय प्रतिष्ठा विधि है जो सरल सस्ती और सत्यं शिवं सुन्दरं है। आज इस महा मंहगाई और बिना फुरसत के युग में इसके प्रचार की नितांत आवश्यकता है।

महापुराण (जिनसेनाचार्य कृत) में भी पर्व ४३ में लिखा है—



कारयंती जिनेन्द्रार्चाश्चित्राः मणिमयीर्बहूः ॥ १७३ ॥
तत्प्रतिष्ठाभिषेकान्ते, महापूजा प्रकुर्वती ॥ १७४ ॥

(वह सुलोचना विविध रत्नमयी बहुत सी जिन प्रतिमायें बनवाकर उनका प्रतिष्ठाभिषेक होने पर फिर पूजा करती थी।) यहाँ के "प्रतिष्ठा-भिषेक" शब्द से भी अभिषेक से ही प्रतिष्ठा होने की प्राचीन विधि का परिज्ञान होता है।

मुझे ऐसा जंचता है कि—संस्कृत में जो देवनंदि माघनंदि गुणभद्रादि के स्वतंत्र अभिषेक पाठ पाये जाते हैं वे सब भी प्रतिष्ठा विधि रूप ही हैं—अर्थात् उन सब को स्वतंत्र प्रतिष्ठापाठ ही समझना चाहिये इसी से उनकी स्वतंत्र रचना हुई है।

वसुनंदि श्रावकाचार (प्राकृत) में जो गाथा ३८७ से ४२४ तक कुल ३८ गाथाओं में प्रतिष्ठा-विवरण है वह आशाधरादि से प्राचीन है। उसमें भी वरांग चरित की ही तरह अभिषेक से ही प्रतिष्ठा पूर्ण मानली है। वसुनंदि ने जटासिंह नंदि के कथन को कहीं कहीं पल्लवित किया है वसुनंदि ने एक दिन के बजाय चार दिन रखे हैं किन्तु उन्हें किन्हीं भी कल्याणक का रूप नहीं दिया है। ५ दिन का पंचल्याणक तो रखा ही नहीं है। तिलक दान और नयनोन्मीलन विधि बढ़ाई है किन्तु शासन देव पूजा और पंचा-मृताभिषेक के नये कथन नहीं किये हैं।

आज जो पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि प्रचलित है वह आधुनिक है और प्राचीन से बहुत ही रूपान्तरित परिवर्तित हो गई है।

वरांग चरित में प्रतिष्ठेय प्रतिमा को विलेपन, पुष्पमाला, आभूषणों से अलंकृत करना लिखा है साथ ही अबभृथ (अंतिम) स्नान से फिर उसकी शुद्धि भी करदी है किन्तु वसुनंदि ने यह सब कुछ भी नहीं लिखा है। यह दोनों में खास अन्तर है। वरांग चरित की प्रतिष्ठा विधि ही श्वेताबरों के यहाँ नित्य पूजा में ज्यों की त्यों उतर आई है। हमारे यहाँ भी आज पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा की बहुतसी बातें नित्य पूजा में उतर आई हैं। यह एक तरह से सही है कि—पंचोपचार और अष्टद्रव्य पूजा (नित्य पूजा) पंच कल्या-णक का ही प्रतीक है जैसा कि मैंने "अष्टद्रव्य पूजा रहस्य" निबंध में

बताया है। आदि पुराण पर्व ३८ श्लोक २७ से २९ में अष्टद्रव्य पूजा और मूर्ति निर्माण मूर्ति प्रतिष्ठा तथा मुनि को आहारदान इन तीनों को नित्य पूजा में गर्भित किया है। किन्तु प्रतिष्ठा और नित्य पूजा में अन्तर है। प्रतिष्ठा में मूर्ति के साथ पंचकल्याणक के संस्कार किये जाते हैं जो एक बार ही होते हैं पुनः नहीं। नित्य पूजा में मूर्ति के साथ नहीं मूर्ति के सामने पंचकल्याणक का अभिनय नकल अष्ट द्रव्यादि द्वारा की जाती है। इस तथ्य को सीमा भेद को न समझने से पूजा विधियाँ कुछ रूपों में परस्पर विसंवाद का कारण बन गई हैं।

वरांग चरित में अभिषेक से ही प्रतिष्ठा संपन्न होना माना है। फिर इसमें विस्तार होकर वसुनन्दि श्रा०, सावयधम्म दोहा (नं० १९७), आशाधर वसुनन्दि द्वि०—नेमिचन्द्रादि के प्रतिष्ठा पाठ, श्वे० ग्रन्थों में तिलकदान विधि दी है। पूजासार, एक सन्धि संहिता, इन्द्र नन्दि संहिता में तिलक विधि नहीं दी है उनमें नयनोन्मीलन को ही प्रमुखता दी है। बाद में इसमें सूरि मंत्र भी जुड़ गया है। सोमसेन त्रिवर्णाचार (१८ वीं शती) में तिलकदान और सूरिमंत्र से प्रतिष्ठा मानी है।

जैसे—लौकिक में पहली "राज्याभिषेक" प्रचलित था फिर "राजतिलक" प्रचलित हुआ उसी तरह मूर्ति प्रतिष्ठा में पहले अभिषेक था फिर तिलक विधि का प्रचलन हुआ।

आजकल सूरिमंत्र से मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा होती है। प्रतिष्ठाचार्यादि नग्न होकर इसे मूर्ति के कानों में पढ़ते हैं किन्तु ऐसा किसी भी प्रतिष्ठा शास्त्र में नहीं लिखा है यह तो शास्त्रज्ञान से हीनों का विधान है जो अनेक आपत्तियों का निधान है। सूरिमंत्र वास्तव में सूर्य (सूर) मंत्र है, यह हिन्दुओं का प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है। गायत्री और सावित्री सूर्य की दो पत्नियां हैं उन्हीं का नाम पर यह गायत्री मंत्र बना है जो इस प्रकार है।

"ॐ भूर्भुवः स्वः ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि-धियो यो नः प्रचोदयात्" इसी में 'असि आउसा' जोड़कर इसे जैनरूप दे दिया है।

प्रतिष्ठा विधि में कैसे कैसे मनोरंजक विचित्र परिवर्तन अब तक हुए हैं इसकी संक्षिप्त झांकी हमने ऊपर देखी। वरांग चरित में प्रतिष्ठा विषयक ही



नहीं अन्य अनेक विषयों का स्वाभाविक मौलिक हृदय को छूने वाला वर्णन पाया जाता है। यह एक बहुत ही आदर्शमय महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके तृतीय सर्ग में बताया है कि—वरदत्त केवली भगवान् ने शिलातल पर बैठ कर धर्मोपदेश दिया। काव्य होते हुए भी इसमें व्यर्थ की अतिशयोक्तियां, शृंगारिक अश्लील वर्णन कतई नहीं हैं। यह कृति वास्तव में अद्वितीय और अनुपम है। कारंजा आदि में जो इसकी प्राचीन प्रतियां हैं उन्हें प्राप्त कर इसका पुनः अतिशय शुद्ध संपादन होना चाहिये फिर प्रांजल हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन हो तो श्रेयस्कर रहे। व्यर्थ के व्यासंगों से हटकर विद्वानों और साधुसंघों को इस ओर ध्यान देना चाहिये अगर यह कार्य हुआ तो महान् श्रुत सेवा के साथ विशिष्ट धर्म प्रभावना होगी।

मिथ्यातमः पटल भेदन कारणाय,
स्वर्गापवर्ग पुरमार्ग निबोधनाय।
तत्तत्वभावन मनः प्रणमामिनित्यं,
त्रैलोक्य मंगलकराय जिनागमाय॥

विनीत—रतनलाल कटारिया, केकड़ी

: विवरण :

❋ पुस्तक : एक दिन की प्राचीन प्रतिष्ठा विधि
❋ लेखक : रतनलाल कटारिया, केकड़ी ३०५४०४
❋ प्रकाशन समय : मई १९८७
❋ संस्करण : प्रथम-एक हजार प्रति
❋ मूल्य : एक रुपैया
❋ द्रव्य प्रदाता : श्री क्रान्तिचन्द्र जी महेन्द्रकुमार जी कटारिया
कटारिया केरियर्स, ट्रान्सपोर्ट नगर, कानपुर २३
❋ सौजन्य : सन्मार्ग प्रचार समिति, केकड़ी ( अजमेर )
❋ ग्रन्थमाला : श्री मिलापचन्द्र कटारिया जैन ग्रंथमाला
❋ पुष्प : नंबर ८
❋ मंत्री : पदमकुमार कटारिया केकड़ी
❋ मुद्रक : गर्ग प्रिन्टर्स महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर ३०५००१

❋❋❋

॥ श्रीः ॥

# सन्मार्ग प्रचार समिति

❋

—उद्देश्य—

१. अविवेक पूर्ण थोथे क्रियाकांडों, सम्यक्त्व को मलिन करने वाले मिथ्यात्व के परिपोषक विधि विधानों, अपार महंगाई के युग में धर्म के नाम पर किये जाने वाले अपव्ययों का प्रतिरोध ।

२. साधुवेषियों और उनके समर्थक स्वार्थी पण्डितों द्वारा की जाने वाली— सिद्धान्त-विरूद्ध प्ररूपणा, वीतराग धर्म-विमुख पद्धति, समाज को विशृंखल करने वाली कलह विसंवाद जनक प्रवृत्ति, मिथ्या विचार और शिथिलाचार का विरोध ।

३. गुरूडमवाद से मुक्ति दिलाकर जागृति पैदा करने वाले, जिनशासन की प्रभावना करने वाले, वीतराग मार्ग के परिपोषक, समीचीन-धर्म के उद्-बोधक, अहिंसा के प्ररूपक क्रिया कलापों का सम्यक् प्रचार ।

—नियम—

१. वितंडावाद कषाय-भावना व्यक्तिगत आक्षेपादि से दूर, शांत शालीन पद्धति में विश्वास रखनेवाला, सद्धर्म-प्रचार की भावना रखने वाला, अहिंसा और वीतराग मार्ग की रक्षा के लिये सदैव सन्नद्ध, निर्भीक और स्वस्थ विचारक कोई भी सज्जन इस समिति का सदस्य बन सकता है :

२. सदस्यता फीस ३१) रुपये हैं ।

## —कार्य—

फिलहाल समिति ने सन्मार्ग प्रचारार्थ एक ग्रंथमाला प्रारम्भ की है जिसका नाम "श्री मिलापचन्द्र कटारिया जैन ग्रंथमाला" रखा गया है।

५ मई ७१ को दिवंगत स्व० पण्डित-प्रवर मिलापचन्द्रजी स०० कटारिया, केकड़ी की अनवरत श्रुत-सेवाओं को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये उनकी पुनीत स्मृति में यह ग्रंथमाला स्थापित की गई है।

समिति के सदस्यों को इस ग्रंथमाला के सभी प्रकाशन बिना मूल्य दिये जाने का प्रावधान है।

कोई भी सज्जन समिति के उद्देश्यों के अन्तर्गत किसी भी विषय का कोई ट्रेक्ट छपवाना चाहें तो समिति छपवा देगी। अर्थ-व्यय उन्हें वहन करना होगा।

किसी भी त्यागी और पण्डित द्वारा वीतराग मार्ग पर की जाने वाली कैसी भी आपत्ति-शंका-उत्सूत्र प्ररूपणा आदि के निरसन के लिये कभी भी किसी संस्था समाज और व्यक्ति विशेष को आवश्यकता हो तो समिति से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं समिति हर सम्भव सहयोग के लिये सदैव तैयार रहेगी।

**मन्त्री**—पदमकुमार कटारिया, केकड़ी

मिथ्या तमः पटलभेदन कारणाय।
स्वर्गा पवर्ग पुरमार्ग निबोधनाय॥
तत्तत्व भावन मना प्रणमामि नित्यं।
त्रैलोक्य मंगल कराय जिनागमाय॥

***

॥ श्री शान्तिनाथाय नमः ॥

### वीतराग मार्गानुसार

# मंदिर के नियम

(जिन-पूजाभिषेक करते समय इनका अवश्य ध्यान रखें)

१. शासन देवादि कुदेव पूजा न करें।
(वीतराग पूजा ही करें)

२. पंचामृताभिषेक न करें।
(जलाभिषेक ही करें)

३. प्रतिमा के चरणों पर केशर चन्दन न चर्चे।
(प्रतिमा के आगे ही चढ़ावें)

४. सचित्त फल फूलादि न चढ़ावें।
(प्रतिमा के आगे अचित्त ही चढ़ावें)

५. रात्रि में पूजाभिषेक न करें।
(दिन में ही करें)

६. प्रतिमा का अभिषेक स्पर्श स्त्री न करें।
(पुरुष ही करें)

जिन प्रतिमा जिन सारखी कही जिनागम माहि।
रंचमात्र दूषण लगे, बंदनीक सो नाहि॥
वीतराग ही देव हैं, रागी होय कुदेव।
राग सहित कूँ त्याग कर वीतराग कूँ सेव॥
जिन प्रतिमा जिन रूपकी, अन्तर बाहिर शुद्ध।
पुष्प लेप अरू केवड़ा ये प्रत्यक्ष विरुद्ध॥

—व्यवस्थापक

*